

DPN 6004

अंत न पाई तुम कहाँ से चली आई

Title: अगम पथकी, AGAMA PATHAKI ANTA NA PAI TUMU
KAHAM SE AI

Run. No. 6695

Cat. No.

Micro. No.

Subject Song #

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / हिंदी/बौद्ध/नेपाली
Hindi/Bauddha/Nepali

Size in cms. 33x13.8

Folios 1

Lines (in a page) 30

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / Sheet

Author / translator

Scribe / donor

प्रशुप्रतिमान प्रमाथ

Date: NS / SS / VS / KS 1943

Ruler / place

Prasupatiman Pramaaya

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

नाग देखी देरे कंस पुकारे कृष्णलाई नाग छाली कंस मारी मथुरा सुख आई ॥

अति सुख सुख छाला तुम क्या मागन आई ॥ १९५॥

इति स्मृत १९४३ साल मीनी ज्येष्ठ सुदि १५ एउ ४ सादने सिद्धे हुमर ॥ १॥

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अगमपथकी अंतन पाईतु
मुकाहोर्से चली आई॥ थकित भयतु मुमुंदावाला
तुमुक्यामागन आई॥ १॥ ननिररहुन गीनि हामु
केहिन मागगा आई॥ तुमुहीरान हामु नही लिं उग
और कामकुं आई॥ अति॥ २॥ कौन तुमारो जन्म भु
हे कौन तुमारो माई॥ कौन तुमारो जात वंसि क्या का
मकुं आई॥ अति॥ ३॥ गोकुल हमारो जन्म भुमी ज
सोदा हमारो माई॥ जात हमारो देव वंसि कमल ये
रागा आई॥ ४॥ कमल फल को नल वनाव तो एण
तुमुकाहा पाई॥ जव हीनागा जागा भय हो निसे तुमु
कुं चाई॥ अति॥ ५॥ काहे वेगी निहमारो अंतन पाई
॥ उता भुत हामु सो उखेलिये कैसे हामु कुं चाई॥ अति
६॥ नकुत गर्वन कस्ये वाला नाग की हजुरि आई॥
जव हिनाग ले गथा दिय हो चलन तुमुकाहा पाई
॥ ७॥ हरे हुं कमल बहुत हो सो हिलि कुं जाई॥ हामु
तिहि श्री उपदेश वाला वदुरि नघ जाई॥ ८॥ उर हुं क
मल को न काम को ने काज लाई॥ असं मेज सक
रत कंस मसी को कमल चाही॥ ९॥ विनतिकर हुं सु
रवाला तुमारो पाउ सनाम मसी को कमल तो रिदेत
नाग भागी जाई॥ १०॥ मोई देतो जान देहा मुको का
वन्हाई॥ काली नाग मोइ जाला हामु क्या सह ला
ई॥ ११॥ नाग जो ने तुमुजाने नाग दि उठाई॥ उठा उ
ठा काली नाग काल पुरुष आई॥ १२॥ समज हो वा
ला माता पिता समजो वडा भाई॥ समजो वालाई
स्तमित्र कालि नाग लेई॥ १३॥ नहि समजहु हामु
माता पिता नहि समजो सुभद्र भाई॥ कालि नाग ला
ईली नाग डुरा विर आई॥ १४॥ आधी विर गुडर जो य
पक्रे नाग लाई गुल बल कुछुन हिलागे ने वदिये
चाई॥ १५॥ समजो नागिनी माता पिता समजो
सवदर भाई॥ समजो नागिनी इष्ट मित्र कालि

कालिनागलै जाई ॥ १६ ॥ नहीसमुजौ हमु मातापि
तानहीसमुजुं हंसुवडभाई ॥ एकुसमजड श्रीकृष्ण
नारायणातनकाचराणाई ॥ १७ ॥ कानुखोरंदोस्वा
मिहमारादेवगोसआई ॥ समुतकुंकरजोरीविनतिन
मारेपोपोपाउसमाई ॥ १८ ॥ नागदेखीदेरेकंसपका
रेकृष्णालाई नागफालीकंसमारीमथरासुखज
ई ॥ अतिसरूपसुन्दरवालातुमुक्यामागनआई ॥
॥ १९ ॥ इतिसम्यत १६८४ सालमितीजेष्टसुदिन
राजटतदिनेलिख्यमथुभ